रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।"

वर्ष—5 | अंक 50 | अप्रैल 2011 | मूल्यः 5रू.

जिम्मी जीजाजी को विनम्र श्रद्धांजलि

सबके प्रिय जीजाजी श्री जेम्स (जिम्मी) रेनॉल्ड मगिलिगन ओ.बी.ई. का जीवन परिचय

श्री जिम्मी मगिलिगन का जन्म उत्तरी आइरलैंड में 31 मार्च सन् 1943 को हुआ था। वह स्व. श्री जॉन मगिलिगन एवं स्व. श्रीमती लिली मगिलिगन के पुत्र थे। सबके प्रिय जीजाजी श्री जिम्मी एक विख्यात सामाजिक कार्यकर्ता तथा बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में सन् 1988 से 16 अप्रैल 2011 तक प्रबंधक रहे। श्री जिम्मी मगिलिगन विश्व बहाई केन्द्र के सामाजिक व आर्थिक विकास विभाग के आव्हान पर वर्ष 1986 में म.प्र. के ग्वालियर जिले के रब्बानी विद्यालय के 76 एकड़ भूमि के संरक्षण व विकास करने के के लिए भारत आए थे। वह अपना प्रोजेक्ट पूरा करके वापस जाने ही वाले थे कि योग–संयोग से उनकी मुलाकात बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, इंदौर की निदेशिका जनक पलटा से हुई और 27 नवम्बर वर्ष 1988 में वे उनसे विवाह बंधन में बंध गए।

उन्हें संस्थान का प्रबन्धक नियुक्त किया गया। तभी से वो अपनी पत्नी के साथ ग्रामीण एवं आदिवासी समुदायों की सेवा में लग गए।

बहाई शिक्षा से प्रेरित होकर उत्तरी आयरलैण्ड के जिम्मी मगिलिगन ने सात समंदर पार से आकर जिस समर्पित भाव से संस्थान के प्रति अपना तन और मन अर्पित किया था, वह समाज के लिए एक मिसाल थे। वह अपना देश, परिवार और रिश्तेदारों को छोड़कर भारत देश में आकर बस गए और इन्दौर शहर में बरली संस्थान में सेवा देते हुए उन्होने मध्यप्रदेश को अपनी कर्मभूमि बना लिया था।

जिम्मी जीजाजी पिछले 23 वर्षों से समर्पण के साथ ग्रामीण महिलाओं के विकास के लिए अपनी सेवा में प्रयासरत थे। उस समय एक बंजर–सी जमीन और सुनसान जगह पर चलने वाले इस संस्थान के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था कि आने वाले समय में इस संस्थान को सामाजिक व आर्थिक विकास का उदाहरण माना जाएगा। यहाँ पर

सामाजिक और आर्थिक रूप से उपेक्षित आदिवासी व ग्रामीण महिलाओं को व्यवसायिक कौशल, स्वास्थ्य, साक्षरता,

श्री जिम्मी मगिलिगन का परिवार

व्यक्तित्व और पर्यावरण विकास का प्रशिक्षण दिया जाता है। संस्थान में प्रवेश लेते समय जिन महिलाओं को ठीक से हिन्दी बोलना तक नहीं आती, छह महीनों के प्रशिक्षण के बाद वह छात्राएँ ओपन स्कूल परीक्षा को उत्तीर्ण कर लेती हैं। संस्थान परिसर में खेत, बगीचे, सुविधायुक्त भवन, कम्प्यूटर लैब और क्लास रूम हैं। यह संस्थान ही जिम्मी की दुनिया का केन्द्र था। उनके जीवन का उददेश्य था। उनका कर्म, धर्म, उनका घर था और उनका जुनून था। इसी कारण प्रबंधक या सर की बजाय सन् 1988 से वे आदिवासी समुदायों के बीच प्यार से जीजाजी के नाम से अधिक लोकप्रिय थे।

जिम्मी जीजाजी सच्चे कर्मयोगी थे। उन्होंने जीवन भर कर्म को ही पूजा माना। वे बोलने में कम और काम में अधिक विश्वास रखते थे।

अपनी पत्नी श्रीमती जनक पलटा मगिलिगन के साथ उन्होने

समाज सेवा व पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में एक आदर्श दंपति का उदाहरण प्रस्तुत किया था। बहुमुखी प्रतिभा के धनी जिम्मी के शब्दकोश में कठिन शब्द ही नहीं था। वे प्रत्येक कार्य को बड़ी आसानी से निपटा देते थे। विदेशी दिखने वाले और हमेशा सभी से अंग्रेजी में बातचीत करने वाले जिम्मी हिन्दी भी बोलते थे।

सौर ऊर्जा के लिए समर्पित था उनका जीवन

⇒**म.प्र. का पहला सामुदायिक सोलर किचन**—सन् 1998 में उन्होंने बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में मध्यप्रदेश का पहला सामुदायिक 'सोलर किचन' 10—10 मीटर की 3 पैराबोलिक सोलर शैफलर डिशें लगाकर बनाया था। पिछले 13 वर्षो से अब तक हर साल लगभग 300 दिन इस किचन में हर रोज 120 लोगों का नाश्ता, चाय व दोपहर व रात का भोजन बनाया जा रहा है व प्रतिदिन 1 सिलेन्डर गैस/प्रति माह लगभग 900 किलो लकड़ी की बचत होती है।

⇒**विश्व का पहला व एकमात्र स्टोरेज कुकर** भी उन्होंने सन् 1999 में संस्थान में लगाया था। यह कुकर दिन भर सौर ऊर्जा इकट्ठा कर लेता है और रात को इस पर करीबन 10 से 12 किलो आटे की रोटीयाँ बनाई जाती है। संस्थान में विगत कई वर्षो से सोलर चूल्हे पर खाना बनाने वाली सागरी और डाँगरी इस पर रोटी सेंकने, दाल—सब्जी बनाने, गेहूँ, ज्वार, बाजरे का दलिया, खिचड़ी बनाने के अनुभव पर बहुत गर्व से बताती हैं कि जब चाहे जलाओ, खाना बनाओ और बूझा दो। इस चूल्हे पर बरसात को छोड़कर हर मौसम में खाना बनाया जा सकता है। इससे धुँआ नहीं निकलता। लकड़ी, कण्डे, गैस व घासलेट की भी बचत होती है। खाना पौष्टिक रहता है। विटामिन नष्ट नहीं होते हैं तथा समय की भी बचत होती है। सिर्फ आवश्यकता होती है संकल्प लेने की कि "सोलर कुकर पर काम करेंगे।"

⇒**दूसरा सामुदायिक 'सोलर किचन'** जिम्मी ने अपने प्रक्षिशित किए हुए आदिवासी सोलर इंजीनियर श्री सखाराम डावर और श्री राजेन्द्र सिंह चौहान के साथ मिलकर झाबुआ जिले के गड़वाडा गाँव के चेतना हायस्कूल के छात्रावास में पाँच सोलर डिश बनाकर 900 बच्चों का खाना बनाने की क्षमता का मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा सामुदायिक सोलर किचन बनाया।

⇒**तीसरा सामुदायिक सोलर किचन** धार जिले के दत्तीगाँव के स्कूल के छात्रावास में बनाकर दिया जिसमें

450 बच्चों का खाना बनाया जाता हैं।

⇒**चौथा सामुदायिक सोलर किचन** उन्होंने धार जिले के धानी गाँव के कन्या छात्रावास में बनाकर दिया जहाँ पर 250 लोगों का खाना बनाया जाता हैं।

⇒**पाँचवा सामुदायिक सोलर किचन** इन्दौर के कोठारी मार्किट में श्रध्दानंद आश्रम में भी करीबन 60 अनाथ बच्चों के लिए बनाकर दिया हैं।

⇒**हवा और सौर ऊर्जा से संचालित पॉवर स्टेशन सनावदिया गाँव में बनाया**– इंदौर से 18 किलोमीटर दूर सनावदिया गाँव में बसी भूमिहीन 32 गरीब परिवारों

की बस्ती के लिए उन्होने सौर ऊर्जा व पवन चक्की से 2 किलोवॉट का हाईब्रिड पावर स्टेशन बनाया। यह डेली कॉलेज इंदौर के माध्यम से राउंड स्क्वेयर के आस्ट्रेलिया, साउथ अफ्रिका, ओमान, मस्कट, केनेडा, इंग्लैण्ड और स्कॉटलैंड से आए 22 छात्रों ने यहाँ रहकर श्री जिम्मी मगिलिगन के मार्गदर्शन में बनाया और सड़कों को सौर व पवन ऊर्जा से दस दिनों में रोशन किया गया है।

⇒**सोलर डिश बनाने का प्रशिक्षण**–जर्मनी की श्रीमती हाइके होउट के मार्गदर्शन में प्रबन्धक श्री जिम्मी मगिलिगन ने सन् **2003** में झाबुआ, आलीराजपुर, मेघनगर, धार तथा ग्वालियर ज़िले के गाँवों मे कई लोहारों

और सुतारों को 10 मीटर के शैफलर डिश बनाने सिखाए और बिगड़ने पर सुधारने का प्रशिक्षण भी दिया। उल्लेखनीय है कि लोहारों व सुतारों को यह प्रशिक्षण देने का मुख्य उद्वेश्य यह था कि गाँव के लोग सोलर कुकर बनाएंगे तो कुकर की कीमत कम होगी और लोग अधिक से अधिक कुकर खरीदने में अपनी रूचि दिखाएँगे। साथ ही यदि कुकर बिगड़ भी जाए तो उसे आसानी से सुधार

सकेंगे। इसकी विशेषता यह है कि इन कुकरों में विदेशी सामान की कोई जरूरत नहीं है। सोलर कुकर के साथ

जिम्मी जीजाजी ने सोलर वाटर हीटर, सोलर ड्रायर, सोलर बेकरी, सोलर वाटर डिसटिलर और मोबाइल चार्जर भी बनाए।

⇒भारत के ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में 400 से ज्यादा पेराबोलिक सोलर कुकर लगाकर दिए जो कि सफलता पूर्वक उपयाग किए जा रहे हैं।

⇒सोलर कुकर उपयोग करने का प्रशिक्षण प्रशिक्षणार्थियों, देशी–विदेशी शोधार्थियों, स्टॉफ सदस्यों और संस्थान में आने वाले लोगों को दिया।

⇒**स्वयं सहायता समूहों को आजीविका प्रशिक्षण**– सौर ऊर्जा प्रशिक्षण के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों से आने वाली स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को सोलर आजीविका प्रशिक्षण दिया। जिसमें विगत 8–10 वर्षों से अब तक कई समूह यहाँ से प्रशिक्षण लेकर गए हैं और सोलर कुकर को अपनी आमदनी का साधन बनाया है।

⇒धार जिले के ग्राम सेमलीपुरा में मध्यप्रदेश आजीविका परियोजना के सहयोग से दो सोलर टी स्टॉल खोले गए है। श्रीमती कोमल डावर ने एक चर्चा में बताया–हर रोज 70–80 रूपये कमा लेती हूँ। लेकिन हाट बाजार के दिन 1000 रूपये कमा लेते है। इसी तरह अन्य कई महिलाएँ समूह अपने–अपने गाँवों में सोलर कुकर से कमा रही है।

⇒**राष्ट्रीय महिला कोष का राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र घोषित**–श्री जिम्मी के नेतृत्व में वर्ष 2009 इंदौर में बरली संस्थान सौर ऊर्जा के क्षेत्र में राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र घोषित किया गया।

संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन में जीजाजी का योगदान

प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सोलर फुड प्रोसेसिंग (सौर ऊर्जा खाद्य प्रसंस्करण) सम्मेलन संस्थान में 14 से 16 जनवरी वर्ष 2009 में आयोजित की गई। यह अन्तर्राष्ट्रीय सौर ऊर्जा समुदाय विज़न्स जर्मनी, नवीन एवं नवीनीकरण ऊर्जा मंत्रालय भारत सरकार तथा ऊर्जा एवं पर्यावरण अध्ययन शाला देवी अहिल्या वि. वि. के सहयोग के द्वारा आयोजित की गई थी। सम्मेलन में विश्व के 16 देशों के करीब 200 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। सम्मेलन में विश्व विख्यात पर्यावरणविद् श्रीमती वंदना शिवा ने कहा–"संस्थान सोलर एनर्जी पर काम कर रहा है और जैविक खेती पर भी अगर दोनों संस्थाएं मिलकर राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन चलाए तो एक नया परिदृश्य देखने को मिलेगा। किसानों को आत्महत्या नहीं करनी पड़ेगी, ग्रामीण उद्योगों को विकसित होने के अवसर मिलेंगे, पर्यावरण सुधरेगा और पृथ्वी का तापमान कम होगा।"

संस्थान के जल संरक्षण और प्रबंधन में जीजाजी की दूरदृष्टि

जिम्मी जीजाजी ने रेन वाटर हार्वेस्टिंग (बारिश के पानी का पुनः उपयोग), जैविक खेती, वर्मीकम्पोस्ट, (केचुओं से खाद बनाना), व्यर्थ चीज़ों का बेहतर उपयोग तथा पर्यावरण शिक्षा में अपना बहुमूल्य योगदान दिए।

वह प्रशिक्षणार्थियों को एक–एक बूंद पानी बचाने और उसका पुनः उपयोग करने का महत्व बताते थे। इसी का परिणाम है

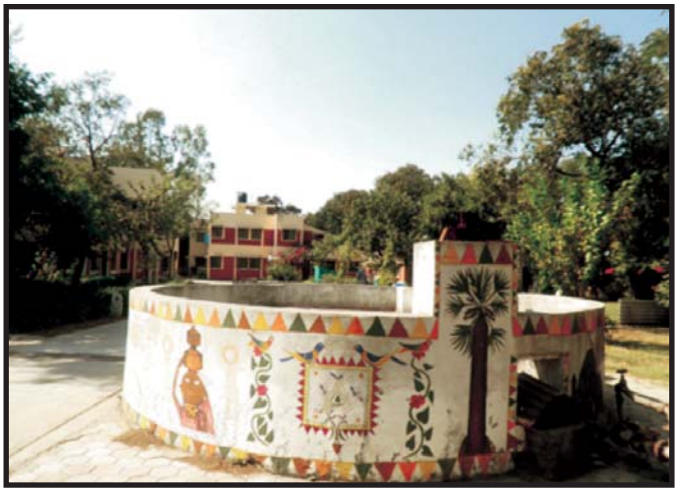

कि बरली संस्थान में रसोईघर, शौचालय, बर्तन साफ करने और भोजन बनाने के बाद पानी को यूँ ही व्यर्थ बहने नहीं दिया जाता। इस पानी का भी सदुपयोग किया जाता है और उसे टंकी में जमा किया जाता है। फिर पाईपों, फव्वारों से खेतों और बगीचों में इस पानी का उपयोग किया जाता है। इस तरह पानी को दोबारा उपयोग किया जाता है। बरसात के पानी को भी व्यर्थ बहने नहीं दिया जाता है। इस पानी को कुएँ के पास गड्ढा करके उसमें रेत, गिट्टी, पत्थर भरकर पानी को इकट्ठा किया जाता है फिर साफ़ करके कुएँ में वापिस डाला जाता है जिससे पानी का स्तर भी बढ़ जाता है। बाद में पानी को जरूरत के अनुसार खेतों में डाला जाता है।

कचरे का सही उपयोग

जिम्मी जीजाजी पर्यावरण को साफ–सुथरा, शुद्ध और सुंदर बनाए रखने पर खास ध्यान देते थे। पर्यावरण के बचाव के लिए यह कोशिश करते थे कि कोई भी चीज बर्बाद न हो।

संस्थान में किसी भी चीज को कचरा या बेकार समझकर फेंका नही जाता। छोटी–छोटी चीज से लेकर बड़े से बड़े कचरा कहे जाने वाले चीजों का उपयोग इस तरह से करते हैं

कि वह कचरा न रहकर उपयोग की वस्तु बन जाती है।

जिम्मी जीजाजी ने रद्दी पेपर व सूखे पत्ते से कंडे बनाने की मशीन बनाई जिसमें रद्दी पेपर और खेत का बारीक कचरा इकट्ठा कर पानी में गलाया जाता है और उससे कंडे बनाए जाते हैं। बरसात में जब धूप नहीं होती तब इन कंडो का चूल्हा जलाकर खाना बनाया जाता है। इन कंडों से धुआं नहीं के बराबर होता है। इससे पर्यावरण को नुकसान नहीं होता है।

संस्थान के लहलहाते खेतों पर उनकी छाप

श्री जिम्मी मगिलिगन ने संस्थान में नए–नए प्रयोग किए। संस्थान के चारों तरफ झाड़ियाँ, उबड़–खाबड़ ज़मीन और सुनसान रास्ते थे। यहाँ कोई चहल–पहल नहीं थी। रात को साय–साय की आवाज गूँजती थीं। लेकिन जिम्मी जीजाजी में ईश्वरीय प्रेरणा थी कि वे सेवा के माध्यम से समाज के लिए कुछ अलग कर दिखाएँगे। इसके लिए उनमे जज़्बा था, आशा थी ऊँची उड़ान भरने की। इसी जज़्बे, सपने और आशा ने

उनके मन में आत्मविश्वास जगाया ऊबड़–खाबड़ और बंजर भूमि को व्यवस्थित करने का।

उन्होने यहाँ की छह एकड़ जमीन में बागवानी, खेती–बाड़ी की शुरूआत की। उन्होने यहाँ के प्रशिक्षणार्थियों और स्टाफ को खेती और बागवानी के नए–नए आसान तरीके सीखाए। चूंकि यहाँ आई हुई अधिकांश प्रशिक्षणार्थी खेती करने वाले परिवारों से आती है, जो यहाँ से जाने के बाद भी खेती का काम करती है, इसलिए प्रशिक्षण में सीखी हुई बातें उन्हें गाँवों में भी काम आती हैं। इस प्रशिक्षण में उन्हें नर्सरी तैयार करना, जैविक खेती करना, कम पानी से पौधे तैयार करना, सब्ज़ी लगाना, पानी का सही उपयोग, फल और सब्जियों के काटने के बाद बचे हुए कचरे, जूठन और बचे हुए भोजन से जैविक खाद तैयार करना तथा खेतीबाड़ी से निकले कचरे और रद्दी पेपर को पानी में गलाकर धुआँरहित कंडे बनाना भी सिखाया जाता है।

प्रकृति से जितना लिया जाता है उतना ही उसे लौटाया भी जाना चाहिए। यह प्रकृति का नियम है। यहाँ पर्यावरण विषय को भी उतना ही महत्व दिया गया है जितना अन्य विषयों जैसे साक्षरता, स्वास्थ्य, व्यावसायिक कौशल आदि को दिया गया है। महिलाएँ पर्यावरण के ज्यादा नज़दीक रहती हैं। इसीलिए उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरूक करना अत्यन्त जरूरी होता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने पर्यावरण विषय को भी पाठ्यक्रम में शामिल कर एक अभिनव प्रयास किया है ताकि ग्रामीण, आदिवासी महिलाएँ जब यहाँ से प्रशिक्षण लेकर अपने गाँव जाएं तो, वे अपने घर, आस–पड़ोस और गाँव को साफ–सुथरा रखें। अधिक से अधिक पेड़–पौधे लगाएं, पानी बचायें, वृक्षों की रक्षा करें, चूल्हे में जलाने हेतु लकड़ियों का प्रयोग नहीं करें। प्रदूषण रोकने हेतु शौचालय का निर्माण करें, कचरे का सदुपयोग करें, ईंधन की बचत हेतु सोलर कुकर का प्रयोग करें, तथा खेतों और बगीचों में जैविक खाद डालें ताकि पर्यावरण शुद्ध रखा जा सकें। बरली संस्थान के अनुसार पर्यावरण को बचाना और इसका विकास करना सभी की आध्यात्मिक जिम्मेदारी है। इसलिए संस्थान के सभी कार्य पर्यावरण को ध्यान में रखकर किए जाते हैं।

संस्थान के सभी भवनों के निर्माण में जीजाजी का योगदान

संस्थान के सभी भवनों का निर्माण जीजाजी के मार्गदर्शन में हुआ। कई भवनों को तो उन्होंने अपने कर कमलो से बनाया।

संस्थान की शुरुआत एक छोटे–से भवन के एक कमरे में हुई थीं। ज़रूरत के अनुसार छोटे–बड़े भवन बनते चले गए। सन् 1999 में कार्यालय, लाईब्रेरी, स्टॉफ निवास आदि बनते चले गए। सन् 2004 में बड़ा हॉल बना। संस्थान ने अपने प्रशिक्षणार्थियों को वे सभी सुविधाएँ भी प्रदान करने की कोशिश की जो आधुनिक शिक्षण–प्रशिक्षण के लिए जरूरी है और जिनसे उनका समग्र विकास हो सकें। खाली और बंजर पड़ी भूमि की ऐसी काया पलट हुई कि यहाँ आज "बरली की दुनिया" आबाद है। इसे देखकर विश्वास नहीं होता है।

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भागीदारी

जीजाजी ने कई राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया जिसमें से कुछ इस प्रकार हैः–

⇒1 जुलाई सन् 2006 को साल्ज़बर्ग, आस्ट्रीया में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भागीदारी।

⇒ग्रानाडा, स्पेन में 12–16 जुलाई 2006 को अंतर्राष्ट्रीय सौर ऊर्जा सम्मेलन में म.प्र. की प्रथम सोलर रसोई पर वक्तव्य दिया।

⇒1 सितम्बर सन् 2006 में स्वीडन में अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला, गोथनवर्ग तथा वहाँ के कई स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों में बरली संस्थान की गतिविधियों पर वक्तव्य दिए।

⇒जर्मनी के कई विश्वविद्यायों में सन् 2006 में वक्तव्य।

⇒काठमाण्डू, नेपाल में 16–17 अप्रैल 2007 को सोलर कुकर पर शोध पत्र की प्रस्तुति की।

⇒सन् 2007 में टेरा फाउंण्डेशन, बारसलोना, स्पेन में अंतर्राष्ट्रीय सोलर कुकिंग एण्ड फुड प्रोसेसिंग कान्फ्रेंस में विशेष वक्ता के रूप में उन्होंने अपनी प्रस्तुति दी थी।

⇒भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा 7 जुलाई 2007 को सार्क सम्मेलन में निमंत्रण।

⇒उन्हें कुनशान विश्व विद्यालय, ताईवान में 13 से 15 अक्टुबर 2008 में "ग्रीन बिल्डिंग एंव अक्षय ऊर्जा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन", में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। उन्होंने बरली संस्थान के अनुभव पर आधारित पर्यावरण अनुकुल ऊर्जा कुशल परिसर को विकसित करने तथा पर्यावरण बचाने के लाभ पर प्रस्तुति दी थी। यहाँ सौर ऊर्जा निर्माताओं, नीति निर्धारको व्यवसायियों, वैज्ञानिकों, विकास और शोध से जुड़े हुए लोगों ने उन्हें बहुत सराहा।

⇒15 से 18 फरवरी सन् 2011 को श्री जिम्मी मगिलिगन ने अपनी पत्नी डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन के साथ भूटान के नामग्येल पोलिटेकनिक में सोलर ड्रायिंग का प्रशिक्षण देने हेतु आमंत्रित किया गया था। यह प्रशिक्षण एस.जी.आई. (सेमडरोप जोनखार इनिशीएटिव) द्वारा आयोजित किया गया था और आज भी वहाँ उनके इस प्रशिक्षण को याद किया जाता है।

श्री जिम्मी मगिलिगन को प्राप्त सम्मान एवं पुरस्कार

जीजाजी को कई सम्मसन प्राप्त हुए जिनमें से प्रमुख हैः

⇒सद्भावना एवं विकास केन्द्र, भोपाल ने श्री जिम्मी मगिलिगन को सन् 2010–11 के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ता का 'इनोवेटिव सोशल एजुकेटर्स एलेक्स मेमोरियल' पुरस्कार दिया। यह पुरस्कार उन्हें समाज के पिछड़े वर्ग की ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं के विकास और सशक्तिकरण में योगदान देने के लिए दिया गया। यह

पुरस्कार मुख्य अतिथि डॉ. (श्रीमती) निशा दुबे कुलपति, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय द्वारा भोपाल में एक विशेष समारोह में 8 अगस्त को दिया गया था। डॉ. दुबे ने कहा, "मै इस दम्पति को 25 सालों से जानती हूँ और व्यक्तिगत रूप से इनका समर्पण देखा है। इस दम्पति को यह पुरस्कार देना मेरे लिए गौरव की बात है जिन्होंने अपना पूरा जीवन गरीब युवा ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण में लगा दिया है।" यह पहला पुरस्कार है जो इस दम्पति को एक साथ दिया गया है।

⇒**आर्डर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर सम्मान**—सन् 2008 में संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन को ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने एक सम्मान समारोह में लंदन के विंडसर कासल में आर्डर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर

से सम्मानित किया। यह सम्मान उन्हें समाजसेवा व भारत के ग्रामीण समुदायों में वैकल्पिक ऊर्जा को बढ़ावा देने हेतु दिया गया था।

श्री जिम्मी हमसे बिछड़ गए

4 अप्रैल, 2011 की सुबह श्री जिम्मी और श्रीमती जनक जिस कार से श्रीमती शिरीन गाडिया को देखने गुजरात जा रहे थे, उस कार की दुर्घटना उज्जैन के समीप हो गयी। श्री जिम्मी दुर्घटना में बुरी तरह से घायल हो गए थे और उन्हें पसलियों, हाथ तथा रीढ़ पर गहरी चोट लगी थी। उन्हें अरविन्दों तथा गोकुलदास अस्पताल इंदौर में 18 दिनों तक आई.सी.यू. में भर्ती रखा गया था। उन्हें बचाने के लिए हर संभव प्रयास किए गए परंतु ईश्वर को शायद कुछ और ही मंजूर था। उन्होंने 21 अप्रैल 2011 को अपनी अंतिम साँस ली।

श्री जिम्मी मगिलिगन की अंतिम यात्रा में इंदौर शहर के शिक्षाविद्व, पर्यावरणविद्व, समाजसेवी, चिंतक आदि सैकड़ों लोग शामिल थे। 23 अप्रैल 2011 को बहाई गुलिस्तान जीतनगर, इंदौर में परिवारजनों तथा मित्रों की उपस्थिति में उनका अंतिम संस्कार बहाई विधानों के अनुसार पूर्ण गरिमा से किया गया।

विश्व न्याय मंदिर का सन्देश

जीजाजी के निधन का समाचार मिलते ही देश–विदेश से शोक संदेश मिलना शुरू हो गए। उनमें से यह मुख्य है:

प्रति,

डॉ. जनक मगिलिन — *22 अप्रैल, 2011*

भारत

प्रिय बहाई मित्र,

विश्व न्याय मन्दिर को 21 अप्रैल 2011 के ईमेल द्वारा आपके प्रिय पति जेम्स मगिलिगन के निधन का समाचार जानकर दुख हुआ। भारत में पायोनियर के रूप में उनकी वर्षों की निःस्वार्थ सेवा तथा बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान से जुड़े उनके अथक प्रयासों को कृतज्ञता से याद करते है। पवित्र समाधियों पर दिव्य लोकों में उनकी आत्मा की उन्नति के लिए विश्व न्याय मन्दिर की प्रार्थनाओं के प्रति आशवस्त रहे। आपके और आपके परिवार के लिए भी प्रार्थनाएं अर्पित की जाएँगी ताकि आशिर्वादित सौन्दर्य इन दुखद क्षणों में आपके शोककुल हृदयों को सांत्वना प्रदान करे।

प्रेमपूर्ण बहाई शुभकामनाओं सहित

सचिवालय विभाग

स्व. श्री जिम्मी को समर्पित प्रार्थना सभा

24 अप्रैल 2011 को बहाई भवन में आयोजित प्रार्थना सभा में

सैकड़ों ने उनकी दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी। शोक सभा में बहाई समुदाय के सैकड़ों बंधुओं के अलावा बरली संस्थान में अध्ययनरत् ग्रामीण व आदिवासी महिलाएँ सहित शिक्षाविद्व, पर्यावरणविद्व, समाजसेवी, चिंतक आदि शामिल थे।

प्रार्थना सभा की शुरूआत उनकी पत्नी डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन ने गुरू ग्रंथ साहब की एक प्रार्थना के गायन से की। उनकी बहन श्रीमती वेरा ने ईसा मसीह के पवित्र लेखों का पाठ किया।

इसके अलावा अलग–अलग धर्मो से डॉ. गीती मित्रा, श्रीमती वंदना बत्रा, श्रीमती ताहिरा वज्दी, श्री पारस वर्मा, श्री गौरव पलटा आदि ने पवित्र लेखों का वाचन कर श्री जिम्मी मगिलिगन को श्रंद्धा सुमन अर्पित किए। प्रार्थना सभा में जिम्मी मगिलिगन की विदेश से आई दोनों बहनें श्रीमती मार्था और श्रीमती वेरा सहित श्रीमती जनक मगिलिगन के परिवारजन भी उपस्थित थे।

प्रार्थनाओं के बाद उनके परिचितों और मित्रों ने जिम्मी जीजाजी को याद करते हुए अपने उद्‌गर व्यक्त किए। सेवाधाम के श्री सुधीर भाई ने कहा कि जिम्मी मगिलिगन एक ऐसे समर्पित इंसान थे जिसकी जितनी तारीफ की जाए उतनी कम है। इंदौर के बहाईयों की स्थानीय आध्यात्मिक सभा के प्रतिनिधि डॉ. आर.बी. शर्मा ने कहा कि जिम्मी ने मौन क्रांति कर हम सबको निरंतर कर्म करने की प्रेरणा दी। समाजसेविका श्रीमती पेरिन दाजी ने कहा कि जिम्मी का जाना समाज सेवा के क्षेत्र में काम करने वालों के लिए अपूर्णनीय क्षति है। पर्यावरणविद् डॉ. राकेश त्रिवेदी ने कहा कि जिम्मी मगिलिगन सबसे बड़े प्रयोग धर्मी थे। श्रीमती ताहिरा जाधव ने कहा कि बरली संस्थान का संसार श्री जिम्मी मगिलिगन ने रचा और उसकी छाप पेड़–पौधों से लेकर सोलर कुकर में दिखाई देती है। श्री तपन मुखर्जी, डॉ. गीता हाण्डा, श्री नजीब शेख, श्रीमती स्नेहलता कुमार, श्रीमती रीतु ग्रोवर ने जिम्मी जीजाजी के निधन को सौर ऊर्जा के क्षेत्र में अपूर्णनीय क्षति बताया।

ये विचार विभिन्न प्रबुद्धजनों के हैं, जो उन्होंने प्रार्थना सभा में श्री जिम्मी मगिलिगन को श्रंद्धांजलि देते हुए रुंधे गले से व्यक्त किए।

प्रार्थना सभा का संचालन श्री संजय पटेल ने किया एवं आभार श्री सुभाष पलटा ने माना।

★ ★ दिवंगतो के लिए बहाई प्रार्थना ★ ★

हे मेरे परमेश्वर! हे तू पापों को क्षमा करने वाले! वरदाता! व्याधियों को दूर करने वाले! सत्य ही, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि जो इस भौतिक देहरूपी चोले को छोड़कर उस आधयात्मिक लोक में आरोहण कर गए हैं, उनके पापों को क्षमा कर, हे मेरे प्रभु!

हे मेरे प्रभु! उन्हें भूलों से मुक्त करके पवित्र कर दे, उनके शोक का निवारण कर और उनके अंधकार को ज्यातिं का रूप दे दे। उन्हें आनन्द उद्यान में प्रवेश दे, परम पावन जल से उन्हें स्वच्छ कर दे और उन्हें वरदान दे कि वे उस पर्वत शिखर पर तेरे वैभव के दर्शन कर सकें।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

बरली की दुनिया ऑनलाईन भी है। इसके पहले वाले अंक www.barli.org के our publications में देख सकते हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी
श्रीमती ताहेरा जाधव, श्रीमती ढेडी बागदरे

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

____

____

____

____

हमें पत्र लिखें

"बरली की दुनिया" के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप हमें नीचे लिखे पते पर पत्र लिखें कि आपको नियमित "बरली की दुनिया" मिल रही है या नहीं।

संपादक "बरली की दुनिया"
बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान
180 भमोरी, न्यू देवास रोड, इंदौर 452010 (म.प्र.) फोन न. 0731–2554066

रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित
मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित **संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन**